एनएचएआई दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेसवे के किनारे "ट्रीज़ फॉर बीज़" परागण गलियारों के माध्यम से जैव विविधता को देगा बढ़ावा

चंडीगढ़, 07 मई 2026

पर्यावरण के अनुकूल राष्ट्रीय राजमार्ग विकास के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दोहराते हुए, भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई), क्षेत्रीय कार्यालय चंडीगढ़, आगामी मानसून सत्र के दौरान दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेसवे के चिन्हित हिस्सों पर परागण (मधुमक्खी) गलियारों के विकास का कार्य शुरू करने जा रहा है।

यह पहल ग्रीन हाईवेज़ पॉलिसी, 2015 तथा स्वीकृत वार्षिक वृक्षारोपण कार्ययोजना 2026-27 के अनुरूप है, जो पर्यावरण के प्रति संवेदनशील वृक्षारोपण पद्धतियों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

एनएचएआई के अध्यक्ष की परिकल्पना के तहत शुरू किए गए "ट्रीज़ फॉर बीज़" अभियान का उद्देश्य ऐसी पौध प्रजातियों को बढ़ावा देना है जो मधुमक्खियों एवं अन्य परागणकर्ताओं के लिए उपयोगी हों तथा किसानों की फसल उत्पादन क्षमता बढ़ाने में सहायक बनें। इसके अंतर्गत प्रस्तावित गलियारों में मधुमक्खियों के अनुकूल वनस्पतियों की निरंतर श्रृंखला विकसित की जाएगी, जिनमें ऐसे पुष्पीय पौधों का चयन किया जाएगा जो पूरे वर्ष मधुरस (नेक्टर) और पराग उपलब्ध कराते रहें।

स्वीकृत कार्ययोजना 2026-27 के अंतर्गत पंजाब और हरियाणा में कुल 3,86,653 पौधे लगाए जाने का प्रस्ताव है, जिनमें—

पंजाब में : 1,48,725 पौधे

हरियाणा में : 2,37,928 पौधे

वृक्षारोपण कार्य आगामी मानसून मौसम में किया जाएगा ताकि अनुकूल जलवायु परिस्थितियों का लाभ लेते हुए पौधों की बेहतर वृद्धि और अधिक जीवित रहने की संभावना सुनिश्चित की जा सके।

मधुमक्खियाँ और अन्य परागणकर्ता कृषि, बागवानी और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हालांकि, पर्यावरणीय और प्रदूषण संबंधी विभिन्न कारणों से इनकी संख्या में लगातार गिरावट आ रही है। राष्ट्रीय राजमार्गों के किनारे किया जाने वाला

वृक्षारोपण, उपयुक्त पौध प्रजातियों के चयन और योजनाबद्ध रोपण के माध्यम से इनके लिए अनुकूल आवास तैयार करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है।

इस पहल के तहत निम्नलिखित हिस्सों को कार्यान्वयन के लिए चिन्हित किया गया है—

पंजाब: भवानीगढ़ के निकट पटियाला-बठिंडा रोड (एनएच-7) के जंक्शन से भोगीवाल गांव के निकट लुधियाना-मलेरकोटला रोड के जंक्शन तक।

हरियाणा: दिल्ली-अमृतसर-कटरा एक्सप्रेसवे, पैकेज-5 (एनई-5)।

इन गलियारों में नीम, जामुन, अर्जुन, अमलतास, पीपल, कदंब, आंवला और नीली गुलमोहर जैसी देशी एवं स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल प्रजातियों के साथ-साथ मध्य पट्टियों (मीडियन) में उपयुक्त झाड़ीदार पौधे लगाए जाएंगे। पौध प्रजातियों का चयन इस प्रकार किया गया है कि विभिन्न मौसमों में क्रमिक रूप से फूल खिलते रहें और लगभग पूरे वर्ष परागणकर्ताओं को पुष्प उपलब्ध हों।

पारिस्थितिक संपर्क को मजबूत करने के लिए लगभग 500 मीटर से 1 किलोमीटर की दूरी पर फूलदार वृक्षों के समूह लगाए जाएंगे, जो परागणकर्ताओं की औसत भोजन खोज सीमा के अनुरूप होंगे।

“ट्रीज़ फॉर बीज़” शीर्षक से चलाए जाने वाले इस विशेष अभियान को स्वीकृत वार्षिक वृक्षारोपण कार्ययोजना 2026-27 के अंतर्गत बिना किसी अतिरिक्त वित्तीय भार के लागू किया जाएगा। इससे महत्वपूर्ण पर्यावरणीय लाभ मिलने, जैव विविधता को बढ़ावा मिलने तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति एनएचएआई की प्रतिबद्धता और मजबूत होने की उम्मीद है।

एनएचएआई देशभर में अवसंरचना विकास के साथ स्थिरता और पर्यावरण संरक्षण को जोड़ते हुए निरंतर उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है तथा पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार विकास के नए मानक स्थापित कर रहा है।

****